Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

नैतिक मूल्यों का पर्याय है पर्यावरण शिक्षा

Susri. Kiran Pawar*

Research Scholar, Mewad University, Chittord

----------X----------

आज की आवश्यकता है कि मूल्यपरक शिक्षा पूरे देश में युवाओं को दी जाए। मूल्यपरक शिक्षा शिक्षण प्रकिया का केन्द्र–बिन्दु होना चाहिए ।

महाविद्यालयों में न आने वाले, रोजगार में लगे या बेरोजगार युवाओं को भी अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों से नैतिक तथा मूल्यपरक शिक्षा दी जानी चाहिए ।

इस शिक्षा से अभिभावक तथा समाज की संलग्नता अनिवार्य है । शिक्षा किसी भी स्तर पर हो – बाल्यकाल, किशोरावस्था, युवावस्था पाठ्यक्रम एवं शिक्षा की विधियां ऐसी हों कि व्यक्ति में आवश्यक मानवीय मूल्य आसानी से विकसित किये जा सकें । मूल्यपरक शिक्षा, शिक्षक–शिक्षा में भी होना चाहिए ताकि शिक्षक आदर्श हो, विभिन्न महान आदर्शों से परिचय करवाते हुए मूल्यों की शिक्षा दें सकें ।

मूल्यों की आवश्यकता क्यों है ?

1. उत्तरदायी नागरिक के निर्माण के लिए
2. विश्व मानव के निर्माण के लिए
3. राष्ट्रीय लक्ष्यों का ज्ञान करवाने के लिए
4. सृष्टि के कल्याण के लिए
5. पर्यावरण की सुरक्षा के लिए
6. वसुधैव कुटुंबकम् भावना के विकास हेतु
7. अंतर्राष्ट्रीय हितों के लिए
8. विश्वशांति के लिए
9. सत्य, अहिंसा, प्रेम स्थापना हेतु
10. वैज्ञानिक तथा तकनीक संसाधनों के सही उपयोग हेतु

सामाजिक व मानवीय मूल्यों का परिपालन हर नागरिक के लिए जरूरी है । देश व समाज के लिए अच्छे नागरिक का निर्माण मूल्य शिक्षा द्वारा ही संभव है ।

राष्ट्रीय चरित्र के विकास के लिए अग्रलिखित गुण आवश्यक हैं :–

1. मानवता के प्रति उदात्त भावना
2. सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का आदर एवं परिपालन
3. अच्छे नागरिक के गुणों का विकास
4. पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता
5. सदाचार, अनुशासनप्रियता एवं कर्त्तव्य परायणता
6. समन्वय एवं सहयोग की भावना
7. धार्मिक सहिष्णुता, धर्म निरपेक्षता
8. लोकतांत्रिक मूल्यों एवं समाजवादी आदर्शों के प्रति निष्ठा
9. राष्ट्रहित को धर्म, भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, जाति आदि के संकुचित हितों से उपर रखना
10. राष्ट्रीय विकास में सहयोग एवं सकारात्मकता
11. राष्ट्र प्रेम के साथ साथ वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आत्मसात करना
12. सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं प्रयासशीलता

सुदृढ़ राष्ट्रीय चरित्र के अभाव में न तो सामाजिक एवं आर्थिक विकास संभव है ना ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता अपेक्षित है। संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ग्रेट ब्रिटेन जैसे देशों की उतरोत्तर प्रगति में सबसे बड़ा योगदान राष्ट्रीय चरित्र का है । भारतवर्ष को विश्व के मानचित्र पर एक महान देश के रूप में स्थापित करने के लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि हमारे देश का राष्ट्रीय चरित्र सुदृढ़ बने ।

मानवीय दृष्टिकोण से ही मनुष्य वास्तविक रूप से मनुष्य होता है जहां मनुष्य सभी के हित के लिए कार्य करता है । मानवतावादी दृष्टिकोण में सभी मनुष्य समान हैं । मानवतावाद मानव को कला, दर्शन, जीवन, साहित्य द्वारा नैतिक आध्यात्मिक विकास के अवसर देता है । यह विज्ञान को साधन के रूप में प्रयुक्त करता है। वैज्ञानिक मानवतावाद कहे जाने वाले मानवतावाद को प्रकृतिवाद, नव–मानववाद भी कहते हैं । महात्मा गांधी के अनुसार **''मानवता की सेवा करना ही वास्तव में**

www.ignited.in

मानवतावाद है । '' मानवता की सेवा के लिए दया, करूणा, सेवा, उदारता, सहिष्णुता, उदारता, समभाव आदि गुण मूल्य शिक्षा से ही विकसित किये जा सकते हैं । उच्च शिक्षा के बाद विभिन्न क्षेत्रों में सेवा देने जा रहे विद्यार्थी युवाओं को मूल्यों की शिक्षा देकर देश व समाज को अच्छे नागरिक देने का कार्य शिक्षा द्वारा ही संभव है । शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है । शिक्षित व्यक्ति ही मानवों में परस्पर सद्भाव, सहानुभूति रख सकता है। मानव का नैतिक विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है । मास्लो महोदय यह मानते हैं कि **''व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास तथा सामाजिक सामंजस्यता के लिए स्वस्थ मन और मस्तिष्क का होना बहुत जरूरी है और यह शिक्षा पर निर्भर करता है।** मानवतावाद के मुताबिक विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास करना, आत्मबोध जागृत करना, विभिन्न रचनात्मक शक्तियों का विकास करना, चेतना को विकसित करना, वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए सर्वांगीण विकास करना आवश्यक है । आवश्यक है कि पाठ्यक्रम ऐसा हो कि मानवीय आकांक्षाओं तथा लक्ष्य प्राप्त करें । आदर्शों व सांस्कृतिक धरोहरों का आधार हो । छात्रों की रूचियों तथा योग्यताओं को प्रश्रय मिले । छात्रों की आवश्यकताओं व क्षमताओं को महत्व दे । मानवीय मूल्यों को विकसित करने वाले विषयों का समावेश हो । शिक्षक द्वारा छात्रों में चिंतन, मनन, तर्क जैसे गुण विकसित किये जो हैं । अतः कुशलता के लिए शिक्षक को वैज्ञानिक विधि का ज्ञान हो यह आवश्यक है । शिक्षक छात्र को इस योग्य बनाये कि छात्र स्वयं अपनी समस्याओं का हल कर सकें । छात्रों को संस्कृति की रक्षा के लिए प्रेरित करने का कार्य शिक्षक द्वारा ही किया जाता है । शिक्षण पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग हो । मानवतावाद के सही उपयोग से शिक्षक सामाजिकी, मानविकी जैसे विषयों को महत्व देते हुए शिक्षा में प्रजातांत्रिक मूल्यों का सही अनुपालन करे, करवाए । छात्रों को नैतिकता का, मूल्यों का पाठ पढ़ाए । मानवीयता को पतन से बचाए । मनुष्य को शीलवान बनाए, आर्दश मानव बनाए । भारतीय धर्मग्रंथों में मूल्यों के लिए ''**शील**'' शब्द प्रयुक्त हुआ है । मूल्य व आदर्श दोनों ही चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

जीवन मूल्य अनेक हैं :–

1. शैक्षिक मूल्य
2. शिक्षण में नियमितता, निष्ठा
3. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता एवं निष्पक्षता
4. स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना
5. व्यवसाय के प्रति निष्ठा
6. छात्रों की सृजनात्मकता का पोषण
7. मौलिकता के प्रति सद्भाव

8. नैतिक मूल्य

1. ईमानदारी
2. त्याग
3. निष्ठा
4. करूणा
5. दया
6. उत्तरदायित्व की भावना
7. नम्रता
8. सेवा
9. सत्यनिष्ठा
10. अहिंसा

9. सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य

1. सामाजिक दायित्व
2. आदर्श नागरिकता
3. लोकतंत्र
4. मानवतावाद
5. सामाजिक संवेदनशीलता
6. राष्ट्रीय एकता

10. वैश्विक मूल्य

1. स्वतंत्रता
2. सर्वधर्मसमभाव
3. विश्वबंधुत्व
4. प्रेम
5. न्याय व अवसर की समानता
6. दासताओं का उम्मूलन
7. शान्ति

11. वैज्ञानिक दृष्टिकोण

1. वस्तुनिष्ठता
2. सृजनात्मक सोच
3. तथ्यपरकता
4. तर्कयुक्ता
5. ज्ञान के प्रति उत्सुकता
6. सृष्टिहित में विज्ञान उपयोगी

12. सांस्कृतिक मूल्य

1. संस्कृति का संरक्षण
2. संस्कृति का हस्तांतरण
3. सांस्कृतिक विरासत की अक्षुणता
4. राष्ट्र में सांस्कृतिक एकता का संस्थापन

13. पर्यावरणीय मूल्य

1. प्रकृति के प्रति सरोकार
2. पर्यावरण संरक्षण
3. पर्यावरणीय चेतना
4. वृक्षारोपण
5. वृक्षरक्षण
6. प्रदूषण निवारण

उच्च शिक्षा के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित समिति ने सुझाव दिए कि छात्रों को श्रेष्ठ धार्मिक सिद्वांत, महान व्यक्तियों की जीवनियां पढ़ाई जाएं जिनमें श्रेष्ठ विचारों, श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश हो। संसार के धार्मिक ग्रंथों से सार्वभौमिक महत्व के चुने हुए अंश पढ़ाए जाएं। धर्म–दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन किया जाए। भारत सरकार ने अगस्त 1959 में श्री श्रीप्रकाश की अध्यक्षता में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा समिति की नियुक्ति की जिसकी 1960 की सिफारिशों के अनुसार उच्च शिक्षा में विभिन्नधर्मों का अध्ययन, धर्म एवं पवित्र ग्रंथों का अध्ययन, धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल रहे। सन् 1964 में प्रोफेसर डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में गठित ''**शिक्षा आयोग**'' ने विश्वविद्यालय स्तर पर मूल्य शिक्षा हेतु सुझाव दिए – छात्रों को व्यक्ति के सम्मान, समानता, सामाजिक न्याय, कल्याणकारी राज्य आदि की शिक्षा दी जाए । नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के लिए प्रदेशों, देशों की संस्कृति से संबंधित सामग्री का संकलन किया जाए ।

संसार के विभिन्न धर्म पढाए जायें । धार्मिक नेताओं की जीवनियां पढ़ाई जाएं । धर्म दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन किया जाए ।

विश्वविद्यालय के तुलनात्म्क धर्म विभागों द्वारा उपयुक्त धार्मिक व नैतिक साहित्य तैयार किया जाए । सन् 1970 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने – श्रम का विकास, सामाजिक जागरूकता व उत्तरदायित्व की भावना का विकास, दूसरे धर्मों का आदर, निर्भयता, सत्यवादिता, पवित्रता, सेवा, अहिंसा आदि मूल्यों के विकास पर बल दिया । आज जरूरत है कि मूल्यपरक शिक्षा का प्रावधान पूरे देश में किया जाए । मूल्यपरक शिक्षा से अभिभावक भी संबद्व हों । मूल्यपरक शिक्षा का उत्तरदायित्व सब शिक्षकों पर हो । मूल्य शिक्षा से संबंधित मुद्रित सामग्री तथा वांछित मूल्यों सें संबंधित फिल्म तैयार की जाये । आज जीवन के शाश्वत मूल्य खो गए हैं । स्वार्थ, आतंक, कट्टरता, धर्मान्धता के आज के भ्रष्ट समय को सही दिशा निर्देश मूल्य ही दे सकते हैं ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

अग्निहोत्री रवींद्र, '**आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान'**, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, 2007, जयपुर।

अग्रवाल, जे. सी. एवं गुप्ता. एस. ' **शिक्षा के आधार** ' शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008।

चॉद किरण, चौहान आर. एस., ' **शिक्षा दार्शनिक परिपेक्ष्य** ' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि. वि., 2006.

ओड डॉ. लक्ष्मी लाल के, ' **शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि** ' राजस्थान ग्रन्थ अकादमी 2007.

पाण्डे, डॉ. रामशकल, ' **शिक्षा–दर्शन और शिक्षाशास्त्री** ' , राजस्थान ग्रन्थ अकादमी 2007.

Corresponding Author

Susri. Kiran Pawar*

Research Scholar, Mewad University, Chittord

E-Mail – kiranpawar27july@gmail.com